दीवान सिंह बजेली

अकादेमी पुरस्कारः प्रदर्शन कलाओं में विद्वत्ता

DIWAN SINGH BAJELI

Akademi Award: Scholarship in the Performing Arts

Born on 20 January 1937, Shri Diwan Singh Bajeli obtained his M.A. (Political Science) from Delhi University, and later he earned a Diploma in Journalism from the Bharatiya Vidya Bhavan. He was a film critic for *The Pioneer* for about a decade, covering several film festivals including the International Film Festivals of India held in various cities in the country. He has been writing for *The Hindu* as a theatre critic for much more than a decade now.

Associated with the Delhi theatre scene for the last four decades as a theatre critic beginning with *The Indian Express* in the eighties for a decade, Shri Bajeli has written extensively for many other dailies such as *The Financial Express*, *The Economic Times*, *The Times of India*, *Patriot*, *The Pioneer*, *The Statesman* and the *Hindustan Times* from time to time. His reviews bear a distinct stamp of their own and throw light on the socio-economic perspective of Indian theatre. His words command the respect of theatre practitioners and his reviews that have been appearing in *The Hindu* for the past 15 years are eagerly awaited. His three books on theatre - *Mohan Upreti: the Man and His Art*, published by the National School of Drama, New Delhi; *The Theatre of Bhanu Bharti: A New Perspective*; and *Yatrik: A Journey into Theatrical Art* (both books published by Niyogi Books, New Delhi), were very well received. His book on Mohan Upreti chronicled the journey of the man credited with bringing about a cultural renaissance in Uttarakhand. The book about Bhanu Bharti highlights the necessity to synthesize traditional art forms with modern dramatic art, pointing especially to the depth of his creativity and his exploration of Bheel art–Gavari. *Yatrik: A Journey into Theatrical Art* highlights Yatrik's 50 years of uninterrupted creative history. Shri Bajeli has written a dozen short stories some of which have been published in English and Hindi publications. He has also written five one-act plays. He has been a member of various committees on theatre constituted by Sahitya Kala Parishad, Delhi, and has been part of the selection committee for Bharat Rang Mahotsav, META awards, etc.

For his critical writings on theatre, Shri Diwan Singh Bajeli has been felicitated by numerous institutions.

Shri Diwan Singh Bajeli receives the Sangeet Natak Akademi Award for the year 2018 for his scholarship in the performing arts.

SANGEET NATAK AKADEMI AWARDS
संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार
2018

20 जनवरी 1937 को जन्मे श्री दीवान सिंह बजेली ने दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर (राजनीति विज्ञान), फिर भारतीय विद्या भवन से पत्रकारिता में डिप्लोमा किया। आप लगभग एक दशक तक द पायनियर में बतौर फिल्म समीक्षक कार्यरत रहे, और इस दौरान आपने देश के विभिन्न शहरों में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों सहित बहुत से फिल्म समारोहों को कवर किया। आप पिछले एक दशक से भी अधिक समय से रंग समीक्षक के रूप में द हिंदू में लिख रहे हैं।

अस्सी के दशक में द इंडियन एक्सप्रेस से रंग समीक्षक के रूप में अपने करियर की शुरुआत करने वाले श्री दीवान सिंह बजेली का दिल्ली के रंगमंचीय परिदृश्य से जुड़ाव पिछले चार दशकों से है। श्री बजेली ने फाइनेंशियल एक्सप्रेस, द इकोनॉमिक टाइम्स, द टाइम्स ऑफ इंडिया, पैट्रियट, द पायनियर, द स्टेट्समैन और द हिंदुस्तान टाइम्स जैसे कई अन्य दैनिक समाचार पत्रों के लिए भी बड़े पैमाने पर लेखन कार्य किया है। आपकी समीक्षाओं की अपनी एक अलग ही छाप होती है जो भारतीय रंगमंच के सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य पर प्रकाश डालती हैं। आपकी लेखनी का रंगकर्मियों में बहुत सम्मान है और पिछले 15 वर्षों से द हिंदू में छपने वाली आपकी समीक्षाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है। नाटकों पर आपकी तीन पुस्तकों – मोहन उप्रेतीः द मैन एंड हिज़ आर्ट, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित; द थिएटर ऑफ भानु भारतीः अ न्यू पर्सपेक्टिव, और यात्रिकः ए जर्नी इन थियेट्रिकल आर्ट (नियोगी बुक्स, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित दोनों पुस्तकें) को रंगजगत द्वारा खूब सराहा गया। मोहन उप्रेती केन्द्रित पुस्तक में उत्तराखंड में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का श्रेय उनकी कलायात्रा को दिया गया है। भानु भारती केन्द्रित पुस्तक में आधुनिक नाट्य कला के साथ पारम्परिक कला रूपों को संश्लेषित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है, विशेष रूप से उनकी रचनात्मक गहनता और भील कला–गवरी की उनकी खोज की ओर इशारा किया गया है। यात्रिकः ए जर्नी इन थियेट्रिकल आर्ट में यात्रिक के 50 वर्षों के अबाधित रचनात्मक इतिहास पर प्रकाश डाला गया है। श्री बजेली ने हिन्दी-अँग्रेजी में 12 कहानियाँ और पांच एकांकी नाटक भी लिखे हैं। आप साहित्य कला परिषद, दिल्ली द्वारा गठित रंगमंच की विभिन्न समितियों के सदस्य रहे हैं, और भारत रंग महोत्सव, मेटा पुरस्कार आदि की चयन समिति का भी हिस्सा रहे हैं।

रंगमंच पर आलोचनात्मक लेखन के लिए श्री दीवान सिंह बजेली को कई संस्थानों द्वारा सम्मानित किया गया है।

प्रदर्शन कलाओं के क्षेत्र में विद्वत्ता के लिए श्री दीवान सिंह बजेली को वर्ष 2018 के संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

SANGEET NATAK AKADEMI AWARDS
संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार
2018